नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

भारत का सतर्क रहना जरूरी

पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच 11 अक्टूबर 2025 की रात जो गोलाबारी और भीषण झड़पें हुईं, उन्होंने पूरे दक्षिण एशिया को एक बार फिर अस्थिरता के भंवर में झोंक दिया है. तालिबान शासन ने जहां 58 पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराने और 25 पाकिस्तानी चौकियों पर कब्जा करने का दावा किया है, वहीं पाकिस्तान सेना ने अपनी जवाबी कार्रवाई में 200 से अधिक तालिबान लड़ाकों को ढेर करने की बात कही है. यह आंकड़े भले ही प्रचार युद्ध का हिस्सा हों, पर एक तथ्य निर्विवाद है कि दोनों इस्लामी पड़ोसी देशों के बीच तनाव इतिहास के सबसे निचले स्तर पर पहुंच चुका है. इस संघर्ष की जड़ें गहरी हैं.

अफगानिस्तान ने पाकिस्तान पर हाल ही में काबुल और पूर्वी प्रांतों पर हवाई हमले करने का आरोप लगाया था, जबकि इस्लामाबाद ने सफाई दी कि उसका निशाना केवल तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के ठिकाने थे. लेकिन इस कथित 'एंटी-टेरर' कार्रवाई ने तालिबान शासन के भीतर राष्ट्रवादी भावनाओं को भड़काया. दरअसल,तालिबान का यह रुख अब न केवल सीमावर्ती हिंसा बल्कि डूरंड रेखा के अस्वीकार के रूप में भी उभर रहा है, जो ब्रिटिश काल से चली आ रही ऐतिहासिक असहमति का प्रतीक है. अफगान जनता और तालिबान नेतृत्व, दोनों ही डूरंड रेखा को एक कृत्रिम विभाजन मानते हैं, जबकि पाकिस्तान इसे अपनी अंतरराष्ट्रीय सीमा घोषित करता है. यही विवाद आज फिर सशस्त्र रूप में सामने आया है. इस पृष्ठभूमि में, भारत को अत्यधिक सतर्कता की आवश्यकता है. पाकिस्तान और अफगानिस्तान दोनों की अस्थिर सीमाएं भारत के सामरिक हितों से गहराई से जुड़ी हैं. तालिबान शासन में भारत की सीमित राजनयिक उपस्थिति हाल के वर्षों में बढ़ी है,

विशेषकर मानवीय सहायता, बुनियादी ढांचा, व्यापारिक संपर्क और शिक्षा सहयोग के क्षेत्र में. काबुल में भारतीय दूतावास की पुनः सक्रियता और अफगान छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों की बहाली इस दिशा के संकेत हैं. लेकिन यदि पाक-अफगान सीमा संघर्ष लंबा खिंचता है, तो दक्षिण एशिया में आतंकवादी नेटवर्क की पुनर्सक्रियता का खतरा वास्तविक हो जाएगा. टीटीपी, हक्कानी नेटवर्क, और आईएस-खुरासान जैसे संगठन इस अस्थिरता में अवसर तलाश सकते हैं. इनका विस्तार केवल पाकिस्तान तक सीमित नहीं रहेगा; कश्मीर, पंजाब और भारत की पश्चिमी सीमा तक इसका प्रभाव पड़ सकता है. पाकिस्तान यदि अपने घरेलू संकट—आर्थिक दिवालियापन, राजनीतिक अस्थिरता और सेना की छवि से ध्यान हटाने के लिए भारत विरोधी बयानबाजी या सीमा पर तनाव बढ़ाने का प्रयास करे, तो यह कोई नई रणनीति नहीं होगी.

इतिहास साक्षी है कि हर बार जब पाकिस्तान के भीतर संकट गहराता है, वह अपने भीतरी असंतोष को भारत-विरोधी एजेंडे में बदलने की कोशिश करता है. इसलिए भारत को अपनी खुफिया और सीमा सुरक्षा एजेंसियों को अतिसतर्क मोड में रखना होगा. इसके साथ ही, नई दिल्ली को कूटनीतिक रूप से भी सक्रिय रहना चाहिए. सऊदी अरब और कतर की मध्यस्थता ने यद्यपि अस्थायी युद्धविराम कराया है, पर एक स्थायी समाधान के लिए भारत को क्षेत्रीय संवाद में रचनात्मक भागीदार बनना चाहिए. भारत की यह भूमिका न केवल दक्षिण एशिया में उसकी जिम्मेदार शक्ति की छवि को मजबूत करेगी, बल्कि अफगान जनता में विश्वास का आधार भी गहरा करेगी. अफगानिस्तान में भारत की छवि एक विकास और स्थिरता के साझेदार की रही है, जिसे और सशक्त बनाने की आवश्यकता है.

कुल मिलाकर यह समय किसी भी प्रकार की निष्क्रियता का नहीं है. पाकिस्तान और अफगानिस्तान की ज्वलंत सीमा भारत के लिए चेतावनी है कि आतंकवाद, राजनीतिक अस्थिरता और कट्टरता का यह त्रिकोण क्षेत्रीय शांति के लिए दीर्घकालिक चुनौती बन सकता है. भारत की नीति स्पष्ट होनी चाहिए,सतर्कता, संयम और सामरिक सक्रियता. यही तीन शब्द दक्षिण एशिया में भारत की स्थायी सुरक्षा और नेतृत्व की कुंजी हैं.

मालवा- निमाड़ की डायरी

ध्रुवों में बंटी अंचल की राजनीति

संजय व्यास

अंचल में कांग्रेस दो ध्रुवीय हो गई है. कांग्रेस ने यहां से जीतू पटवारी को प्रदेश अध्यक्ष और उमंग सिंघार को विधान सभा नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेवारी सौंप रखी है. देखने में तो आता है कि पटवारी -सिंघार मिलकर पार्टी को मजबूत बनाने में जुटे हैं, पर ऐसा नहीं है. जीतू पटवारी के अध्यक्ष बनने के बाद सिंघार समर्थकों को महत्व न मिलने से सिंघार के मन में खटास है. जब से पटवारी ने राज्य कांग्रेस का पुनर्गठन किया है, सिंघार के लोगों को बमुश्किल कोई पद मिला है. जिलाध्यक्ष नियुक्तियों में भी ऐसा ही रहा. यही कारण है कि अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए वे अन्य सामाजिक संगठन के माध्यम से अपनी राजनीतिक मजबूती में लगे हैं. मध्य प्रदेश आदिवासी विकास परिषद के मुखिया के नाते सिंघार ने जब-तब जीतू पटवारी को आइना भी दिखाया है.

अंचल के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में उन्होंने तगड़ी फिल्डिंग कर रखी है, ताकि पार्टी का कोई अन्य नेता उनके इशारे के बिना सफल कार्यक्रम न कर सके. इसकी बानगी सिंघार के निकटस्थ आलीराजपुर के पूर्व जिलाध्यक्ष महेश पटेल की कुछ माह पूर्व जीतू पटवारी को दी गई खुली चेतावनी थी. पटेल परिषद के उपाध्यक्ष हैं. झाबुआ-आलीराजपुर में आदिवासियों की जमीन से बेदखली के विरूद्ध पटेल के आंदोलन की पटवारी ने पार्टी के एजेंडे से बाहर बता खिलाफत की थी. इससे नाराज पटेल ने पार्टी कार्यक्रम के मंच से पटवारी को ललकारा था कि वे हमारे क्षेत्र में एक कार्यक्रम भी कर के दिखा दें. साथ ही उन्होंने कहा था उमंग सिंघार के अलावा वे किसी का कार्यक्रम नहीं होने देंगे. सिंघार आदिवासी विकास परिषद के माध्यम से पटवारी ही नहीं कांतिलाल-विक्रांत भूरिया को भी टक्कर दे रहे हैं.

सिंघार की उपेक्षा

उमंग सिंघार के आदिवासी हिंदू नहीं बयान से उपजे विरोध के बाद से सिंघार को उपेक्षा का सामना करना पड़ रहा है. आदिवासियों को सनातन से अलग-थलग करने की नीति उन्हें पार्टी में ही भारी पड़ रही है. हाल ही में धार में जय ओंकार भिलाला समाज के प्रांतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी पहुंच रहे थे. इस कार्यक्रम की उमंग सिंगार ने आदिवासियों को भील-भीलाला में बांटने की साजिश करार देते हुए कड़ी आलोचना के साथ लोगों से कार्यक्रम से दूरी बनाने की अपील की थी. यहां मुख्यमंत्री पहुंचे और सिंघार की अपील को नजरअंदाज कर लोगों का हुजुम भी आया.

इतना ही नहीं सम्मेलन में क्षेत्र के कांग्रेसी जनप्रतिनिधियों ने भी मुख्यमंत्री मोहन यादव के साथ मंच भी साझा किया. धार के किला मैदान पर आयोजित इस कार्यक्रम में कुक्षी के कांग्रेस के विधायक सुरेन्द्र सिंह बघेल हनी, भीकनगांव की कांग्रेस विधायक झूमा सोलंकी और बड़वानी के कांग्रेस विधायक राजन मंडलोई शिरकत करने वालों में प्रमुख थे. अब अपनी बात की अनसुनी से सिंघार मुंह फुलाए बैठे हैं.

सकते में आम आदमी पार्टी

मालवा-निमाड़ की राजनीति में भाजपा-कांग्रेस की सशक्त भूमिका के बीच यहां सियासी जड़ें जमाने में लगी आम आदमी पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष नरेश गंगे आपसी खींचतान का शिकार हो गए. पार्टी द्वारा बिना नोटिस दिए निष्कासित करने के विरोध में उज्जैन जिले में बड़ी संख्या में आम आदमी पार्टी कार्यकर्ताओं ने इस्तीफा दे दिया. समभाव की बात करने वाली आप पार्टी के पदाधिकारियों पर जातिगत भेदभाव के आरोप लगे हैं. बताया जा रहा है कि नरेश गंगे का निष्कासन इसी भेदभाव का उदाहरण है. पार्टी के पूर्व घट्टिया विस प्रभारी उमेश गुजराती गंगे के पक्ष में खड़े हो गए हैं और जातिगत भेदभाव करने वाले पदाधिकारी को निलंबित करने के लिए अड़ गए है. फिलहाल पार्टी में सिर-फुटव्वलल जारी है और पार्टी कर्ता-धर्ता एक साथ डेढ़ सौ से उपर हुए इस्तीफे से सकते में है.

पीएम मोदी का हनुमान क्षण

दुनिया में भारत की लंबी छलांग

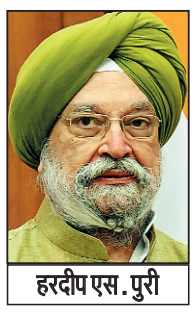

हरदीप एस. पुरी

- भारतीय रिज़र्व बैंक ने वित्त वर्ष 2026 के लिए भारत की जीडीपी अनुमान को बढ़ाकर 6.8% किया है. इसके पीछे कारण बताए गए हैं —
  - मज़बूत घरेलू मांग, स्थिर निवेश प्रवाह और अच्छे मानसून की उम्मीद.
  - सितंबर में जीएसटी संग्रह 1.89 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया.
  - यह लगातार नौवां महीना है जब संग्रह 1.8 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहा. यह दर्शाता है कि देश में खपत बढ़ रही है और टैक्स का दायरा भी फैल रहा है.
  - विदेशी मुद्रा भंडार 700 अरब डॉलर तक पहुंच गया है, जो लगभग 11 महीनों के आयात को कवर करने के लिए पर्याप्त है.

जब पूरे भारत में दीप जलते हैं, तो रामायण का एक अमर दृश्य आज के समय से संवाद करता है. हनुमान जी अपने बल पर संदेह करते हुए सागर के किनारे खड़े हैं, जब तक कि जाम्बवंत उन्हें यह याद नहीं दिलाते कि वह ताकत तो पहले से ही उनके भीतर है. उसके बाद जो छलांग लगती है, वह कोई चमत्कार नहीं, बल्कि आत्मविश्वास का परिणाम है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यही आत्मविश्वास भारत की अर्थव्यवस्था में जगाने की तैयारी कर रहे हैं, ताकि भारत अपनी भीतरी शक्ति के सहारे वैश्विक चुनौतियों को पार कर सके. जैसे-जैसे दुनिया नई वीज़ा बाधाओं और शुल्कों के साथ सिमट रही है, तब मोदी के नेतृत्व में भारत अपने आत्मविश्वास को दुनिया के सामने ला रहा है. भारत विपरीत परिस्थितियों को आगे बढ़ने की ताकत में बदल रहा है.

हाल के महीनों में अमेरिका ने नए एच-1बी वीज़ा आवेदनों पर 1,00,000 डॉलर की फ़ीस और ब्रांडेड व पेटेंट वाली दवाओं के आयात पर 100% शुल्क लगाया है. इन कदमों को रोज़गार सुरक्षा के नाम पर लिया गया बताया गया, लेकिन इसके पीछे एक गहरी चिंता छिपी है — विकसित देशों में बढ़ता संरक्षणवाद और जनसंख्या से जुड़ी असुरक्षा. प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने इसका जवाब तीन ऐसे स्तंभों को मज़बूत बनाकर दिया है, जिन्हें कोई भी शुल्क प्रभावित नहीं कर सकता — पैमाना , कौशल और आत्मनिर्भरता .

दुनिया से भारत का अंतर अब बहुत साफ दिखाई देता है. चीन की आबादी तेज़ी से बूढ़ी हो रही है. वहां की औसत आयु अब 40 साल से ज़्यादा हो गई है, जबकि भारत में यह 29 साल से कम है. हमारे दो-तिहाई लोग 35 साल से कम उम्र के हैं. इस युवा ऊर्जा को जब कौशल, शिक्षा और उद्यमिता के ज़रिए सही दिशा दी जाती है, तो वह भारत को विश्व अर्थव्यवस्था का विकास इंजन बना देती है. जब वैश्विक संस्थाएं बताती हैं कि पिछले साल दुनिया की कुल आर्थिक वृद्धि में भारत का योगदान 16% से ज़्यादा था, तो यह कोई नारा नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पिछले एक दशक के सुधार, निवेश और बुनियादी ढांचे के निर्माण का परिणाम है. हाल के आंकड़े इस रफ्तार को और पुख्ता करते हैं. वहीं जून तिमाही में विदेशी धन प्रेषण 33.2 अरब डॉलर रहा, जो पिछले साल की तुलना में काफी अधिक है. मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई 57.7 और सर्विस सेक्टर पीएमआई 60.9 पर स्थिर रहा, जो यह फिर साबित करता है कि भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था है. यह सकारात्मक रुझान बाज़ारों और सड़कों दोनों पर दिखाई दे रहा है. इस दशहरा सीज़न में खुदरा और ई-कॉमर्स बिक्री अपने अब तक के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गई. उद्योग संगठनों जैसे कैट और रिटेलर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुसार बिक्री 3.7 लाख करोड़ रुपये को पार कर गई, जो पिछले साल से लगभग 15% ज़्यादा है. सिर्फ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर ही त्योहारों के पहले पंद्रह दिनों में 90,000 करोड़ रुपये से ज़्यादा का कारोबार हुआ. सबसे ज़्यादा मांग ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, सोना और कपड़ों में देखी गई.अब उम्मीद है कि दीवाली इस बार सभी पुराने रिकॉर्ड तोड़ देगी जो न केवल उपभोक्ता विश्वास को दर्शाता है, बल्कि सरकार के औपचारिक ऋण, डिजिटल भुगतान और ग्रामीण क्रयशक्ति बढ़ाने के निरंतर प्रयासों की सफलता को भी दिखाता है.

भारत की आर्थिक नींव अब मज़बूत हो चुकी है. पिछले दस वर्षों में भारत की जीडीपी लगभग दोगुनी हो गई है और अब वह दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुकी है. जल्द ही जर्मनी को पीछे छोड़ने की उम्मीद है. विदेशी मुद्रा भंडार 600 अरब डॉलर से अधिक है. मुद्रास्फीति नियंत्रित है, और वित्तीय अनुशासन के साथ सरकार ने रिकॉर्ड सार्वजनिक पूंजीगत निवेश किया है. वित्त वर्ष 2024-25 में भारत का वस्तुओं और सेवाओं का समग्र निर्यात लगभग 825 बिलियन अमेरिकी डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया, जबकि अकेले व्यापारिक निर्यात लगभग 437 बिलियन डॉलर रहा.

(लेखक केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हैं)

क्या इंडिया को मदर ऑफ डेमोक्रेसी मानें?

प्रधानमंत्री मोदी जब कहते हैं कि इंडिया इज मदर ऑफ डेमोक्रेसी, तो सारे भारतवासी उस पर विश्वास कर लेते हैं, जहां श्रद्धा है वहां तर्क की गुंजाइश ही नहीं है. यह बात अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप को भी समझानी चाहिए कि स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी को मत देखो, बल्कि भारतमाता को भक्तिभाव से निहारो और उसे डेमोक्रेसी की मॉम मानो! जर्मनी के लोग अपने देश को फादरलैंड मानते हैं जबकि हम अपनी भारतभूमि को अंग्रेजी में मदरलैंड कहते हैं. मोदी जो कहेंगे उसे अमित शाह दोहराएंगे. बीजेपी प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी उसकी जोर-शोर से पुष्टि करेंगे. इतिहासकार अपना मुंह नहीं खोलेंगे. किसी की हिम्मत नहीं है जो बोले कि भारत में डेमोक्रेसी कब थी? यहां सदियों तक राजतंत्र था. राजा महाराजा शासन करते रहे फिर मुगलों ने 600 साल हुकूमत की तब बादशाहों की सल्तनत थी. अंग्रेज आए तो वह भी 250 साल यहां राज करते रहे. इसके पहले चुनाव मतदान या वोटिंग का उदाहरण क्या कोई इतिहासकार बता सकता है? फिर बात की जाएगी. प्राचीन भारत या एंशिएंट हिस्ट्री के 16 महाजनपदों की जिनमें काशी, कोशल, वैशाली, कोसाम्बी, मगध, लिच्छवी, मल्ल, शाक्य आदि गणराज्यों के नाम आएंगे लेकिन वहां भी राजा और उसके अमात्य या मंत्री रहा करते थे. नगरश्रेष्ठी या नगरसेठ रहा करता था तथा नगरवधु भी रहती थी. आचार्य चतुरसेन शास्त्री न वैशाली की नगरवधु नामक उपन्यास लिखा था जिस पर आम्रपाली नामक फिल्म बनी थी. उसमें वैजयंतीमाला और सुनील दत्त ने अभिनय किया था. देश में पाल, राष्ट्रकूट, चोल जैसे राजवंश थे. मगध (बिहार) में अत्याचारी नंद वंश का शासन था. चाणक्य के प्रतापी शिष्य चंद्रगुप्त मौर्य ने नंदवंश का सफाया कर दिया, मेसिडोनिया से आए सिकंदर की लड़ाई भी पोरस नामक राजा से हुई थी. शासन वंशानुगत होता था. राजा का बेटा राजा बनता था. इसलिए प्राचीन भारत में लोकतंत्र की खोज करना दूर की कौड़ी है.

कोई कैसे विश्वास करे कि भारत मदर ऑफ डेमोक्रेसी है. सरदार पटेल ने 650 से अधिक रियासतों का भारत में विलय कराया. भूतपूर्व राजाओं को करोड़ों रुपए की रकम प्रिवीपर्स के रूप में दी जाती थी जिसे 1971 में इंदिरा गांधी ने बंद करवाया था.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

राज ठाकरे के सामने दुविधा भाई का साथ दें या भाजपा का

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, मनसे प्रमुख राज ठाकरे को बृहन्मुंबई महापालिका के चुनाव के संबंध में तय करना होगा कि अपने चचेरे भाई उद्धव ठाकरे का साथ दें या भाजपा का! आपको याद होगा कि विधानसभा चुनाव में भाजपा ने राज ठाकरे के बेटे अमित ठाकरे को निर्वाचित नहीं होने दिया था. स्वयंस्फूर्ति से भाजपा के समर्थन देने का उन्हें कोई लाभ नहीं मिल पाया था.

हमने कहा, राज ठाकरे के व्यक्तित्व में लोग उन्हें चाचा शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे की छवि देखते हैं. राज उसी शैली में आक्रामक भाषण देते हैं और कड़ा तेवर दिखाते हैं. उनका भाषण सुनने सभा में भारी भीड़ उमड़ पड़ती है और शानदार माहौल बन जाता है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, विडंबना यह है कि यह भीड़ वोटों में परिवर्तित नहीं हो पाती. लोग राज ठाकरे के भाषण और उनकी छींटाकशी युक्त करारी टिप्पणियों का कर्णसुख लेते हैं लेकिन उनकी पार्टी को वोट देने आगे नहीं आते. यही वजह है कि मनसे का कोई सांसद, विधायक तो

दूर, एक नगर पार्षद भी नहीं है.

हमने कहा, निशानेबाज, हम आपको ज्वालामुखी का उदाहरण देंगे जो लंबे समय तक शांत बना रहता है फिर अचानक फूटकर लावा उगलने लगता है. इसी तरह किसी नेता को निष्क्रिय मत मानिए. उसका डॉरमेंट अकाउंट कभी भी एक्टिव हो सकता है. बिहार विधानसभा का चुनाव हो जाने दीजिए. इसके बाद राज ठाकरे अपने राजनीतिक खाते को परिचालित करेंगे. फिलहाल वह मौन हैं.

पड़ोसी ने कहा, जब उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे की मुलाकातें होने लगीं तो उनके मनोमिलन की चर्चा ने तूल पकड़ लिया था. लंबे समय तक राज ठाकरे से अनबन रखने वाले उद्धव जब राज से मिलने गए तो लगता था कि उनका राजनीतिक तालमेल हो जाएगा लेकिन राज ठाकरे ने साफ-साफ कह दिया कि हम मराठी के मुद्दे पर एकसाथ आए थे.

हमने कहा, निशानेबाज, शिवसेना से पहले राज ठाकरे अलग हुए और अलग पार्टी बनाई. बाद में एकनाथ शिंदे ने अपने विधायकों के साथ अलग होकर शिवसेना (शिंदे) बना ली. इस तरह मूल पार्टी के 3 टुकड़े हो गए. अब देखना होगा कि जनवरी या फरवरी में निकाय चुनाव के समय क्या उद्धव और राज साथ आते हैं!

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12050

- डॉ. सागर खादीवाला

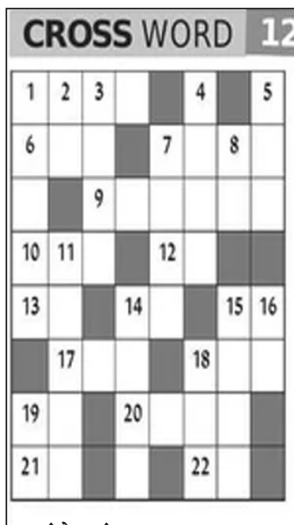

ऊपर से नीचे

1. पीकदान (उर्दू) 2. किसी कार्य विशेष के लिए भेजा हुआ आदमी, दूत, गुप्तचर 3. पितृपक्ष, श्राद्ध 4. वह स्त्री जिसका पति जीवित हो 5. तत्काल, तुरंत, तत्क्षण 7. नकली, कृत्रिम 8. पूंछ 11. चांदी या सोने का वरक बनाने वाला (उर्दू) 14. मिट्टी का तेल 15. अपरिचित, अनजान 16. एक-दूसरे के ऊपर लगी हुई परत, तह (सं) 18. किसी पद या किसी पद पर आरुढ़ होने के अधिकार से (एक्स ऑफिशियो) 19. ककड़ी

बाएं से दाएं

1. ऊंचा होना, उछलना, उछलकर लेना 6. निचोड़ना, पानी के साथ घिसना, नष्ट या बर्बाद करना 7. साहसी, शूरवीर, पराक्रमी 9. जाना और आना 10. बुलावा, भोज का निमंत्रण (उर्दू) 12. जंगल 13. पुरुष जाति का 14. दर्रा, दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता 15. लोप, नष्ट, तिरोहित 17. बिनौलों सहित रूई, रूई का पौधा 18. टपकने या चूने की क्रिया 19. जेब 20. आदान-प्रदान, विक्री का माल या रुपया देने या लेने का व्यवहार 21. रहस्य, गुप्त बात (उर्दू) 22. पैगंबर (उर्दू)

Solution 12049

कु	र	स	त		आ	कृ	ति
हा	य	र	स		व	त	न
र		ल		स	र		क
	वा	ता	व	र	ण		ना
ख	म		फा	का		पा	
लि		म	द्रा	री		य	क्ष
या	त्रा		री		सु	दा	मा
न	स	हा		उ	त	र	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफलता प्राप्त होगी, व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा, वर्ष के मध्य में सत्ता सुख प्राप्त होगा,स्थाई लाभ का योग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, अत्याधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी, अधिकारी वर्ग से मतभेद हो सकता है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम से सफलता मिलेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारों में वृद्धि होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मतभेद हो सकता हे, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सौभाग्यशाली, भाग्यवर्धक, सुन्दर, तथा शांतिप्रिय होगा, आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी, जन्म स्थान के पास अपना भाग्योदय करेगा, पिता के प्रति आस्था रहेगी, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

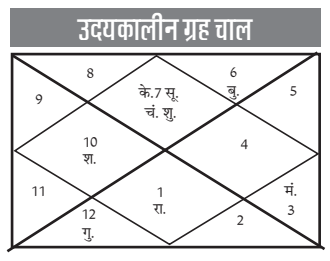

पंचांग

रा.मि. 22 संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण अष्टमीं भौमवासरे शाम 4/6, पुनर्वसु नक्षत्रे शाम 5/29, शिव योगे दिन 12/11, कौलव करणे सू.उ. 6/15, सू.अ. 5/45, चन्द्रचार मिथुन दिन 11/43 से कर्क, शु.रा. 4,6,7,10,11,2 अ.रा. 5,8,9,12,1,3 शुभांक- 6,8,2.

व्यापार भविष्य

कार्तिक कृष्ण अष्टमीं को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, चांदी के भाव में तेजी के रियेक्शन रहेंगे, पीले रंग की वस्तुओं में तेजी होगी. हल्दी, गुड़, सोना, में तेजी होगी, वायदा विचार आज 2 बजकर 9 मिनिट से 15 मिनिट के अन्दर तेजी के रूख पर व्यापार करना लाभकारी रहेगा. भाग्यांक 2585 है.

मेष- साहसिक प्रयत्न से शत्रुओं पर विजय मिलेगी, नौकरी में यश एवं कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा, परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा.

वृषभ- कारोबारी विस्तार की संभावना है, दानधर्म में खर्च होगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करें, साहस पराक्रम बना रहेगा.

मिथुन- बिना मांगे राय न दें, अपमान हो सकता है, नई योजना हाथ में आने के आसार हैं, भूमि भवन, मकान आदि संबंधित विवादों का समाधान होगा.

कर्क- उच्च अध्ययन पर अंतिम निर्णय होगा, यात्रा सुखद रहेगी, मित्र मदद करेंगे, राजनैतिक प्रभाव में वृद्धि होगी. नवीन योजना बनेगी.

सिंह- मौज मस्ती में समय व्यतीत होगा, तीखी बातों से बचें, सोच समझकर पूँजी निवेश करें, आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी,संतान के कार्य बनेंगे.

कन्या- संवाद बनाये रखें, रिश्ते मजबत होंगे, मित्रों के सहयोग से कार्य प्रारंभ किया जा सकता है, जमीन जायजाद मिलने का योग है, मांगलिक कार्यों में खर्च होगा.

तुला- भावुकता में लिये गये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, अधिकारियों का सहयोग तरक्की में सहायक रहेगा, विवादों को टालना हितकर रहेगा.

वृश्चिक- कानूनी मामले पक्ष में हल होंगे, रोजगार के अवसर की तलाश पूरी होगी, शारीरिक अस्वस्थ्यता के कारण व्यवधान आ सकता है.

धनु- सामाजिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी, मांगलिक यात्रा का प्रोग्राम बनेगा, यश मिलेगा. मित्रों से विवाद होगा, कामकाज पूरा होगा.

मकर- नये प्रस्ताव मिलने के आसार हैं, भावनात्मक संबंधों में निकटता बढ़ेगी, पारिवारिक जीवन में सुख शांति रहेगी, मान सम्मान प्राप्त होगा.

कुम्भ- न्यायालयीन प्रयासों में सफलता मिलेगी, नवीन योजनाओं का विकास होगा, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

मीन- बुजुर्गों का ध्यान रखें, शासन सत्ता एवं उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा, मित्र वर्ग मदद करेंगे, आशा से अधिक लाभ प्रसन्नता देगा.

SUDOKU 7182

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7181

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1